रात्रिक्लास 12-10-68 ओमशान्ति ~~सिर्फ~~ विश्व की बादशाही याद है?
परमपिता परमात्मा शिव याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है? सभी को जोर से कहना चाहिए हां। यह है
ोगाम बाप का। बुधि भी कहती है बेहद के बाप से बेहद के सुख का वरसा मिलता है। है तो बहुत सहज
फिर अर्थ समझाया जाता है। शिव बाबा याद है? याद में रहते2 पावन बन पावन दुनिया में चले जावेंगे। सम-
झाना डीफिक्लट नहीं है तो भी बाप/कहते हैं कोटो में कोऊ मेरा बच्चा बनस्थाई और वरसा पा सकता। बापने तो
क्लीयर समझाया हैतुम बहुत सुखी सतोप्रधान थे। तुम अभी तमोप्रधान बने हो। अभी फिर सतोप्रधान बनना है।
जितना बाप को याद करोगे उतना ही सुख बुधि को पाते रहो। वहां तो सुख भी अपार है। पिछाड़ी का गायन
है अति ईन्द्रियसुख का वर्णन बच्चों से पूछो। अपार खुशी रहती है। बहुत याद पड़ता है। बच्चे समझते हैं पुरुषार्थ
बिगर प्रारब्ध मिलना मुश्किल है। पुरुषार्थ करना चाहिए। है बहुत सहज। चलन भी देवताओं जैसी हो। तुम्हारी एम-
आबजेक्ट ही यह बनने का है। यह है सतयुग त्रेता की राजधानी। इसके लिये ही सभी पुरुषार्थ कर रहे हैं। जिन्हों
ने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है वही करेंगे और बाप दादा अन्यन्य बच्चे साक्षी हो देखते रहते हैं। सबसे
सर्विसएबुल फूल कौन है समझ सकते हैंना। बच्चे बैठे ही बाप के सम्मुख हैं जिस बाप से वरसा पाना है। श्रीमत
पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे। बच्चों को बुधि में हैनई दुनिया नई विश्व की आयु कितनी है। इन मकानों की
आयु एक्युरेट कोई बता न सके। बाप तो एक्युरेट बताते हैं। पूरा 5000वर्ष आयु है इस सृष्टि की। हरेक चीज़
सतोप्रधान, सतो रजो तमोप्रधान होते हैं। पढ़ाई में भी नम्बरवार होते हैं। कोई सतोगुणी, कोई रजोगुणी कोई तमो-
गुणी। हरेक अपने एक्टविटी को वा पार्ट को समझ सकते हैं। कहते हैं बाबा आप को याद नहीं कर सकते, भूल
जाते हैं। यह भूलना थोड़ेही चाहिए। जिस बाप से 21जन्मों के लियेसुख का वरसा मिलता हैउनको क्यों भूलें।
तुम्हारी याद सारी दुनिया को पावन बनाती है। तुम अगुंली देने वाले बहुत हीथोड़े हो। तुम्हारे लिये नई दुनिया
जरूर चाहिए। भल थोड़ा याद या बहुत करो। बहुत याद करेंगे तो उच्च पद पावेंगेपरन्तु दुनिया को तो पवित्र
बनना ही है जरूर। तुम ब्राह्मणों को देवता नहीं कहेंगे। हां इनके बाद देवता बनेंगे। शुद्र से ब्राह्मण न बने हैं
तो यहनालेज पा न सकेंगे। जितना बड़ा इम्तहान उतनीबु बड़ी खुशी। आईसी0 एस0 पास कर बड़ा पद पाते
हैं। तुम बच्चे बने हो अंधों की लाठी। तुमबने हो लाठी रास्ता बताने लिये। बाप भी अंधों की लाठी है सभी को
सजा बनाकर सभी को साथ में घर तक ले जाते हैं। सबसे जाफ्ती सोसलवर्करस बाप ठहरा। सो भी रूहानी सोसल-
वर्करस। एक ही रूहानी सोसलवर्करस है जो इतने सभी को रूहानी सोसलवर्करस बनाते हैं। यह बाप बिगर और
कोई सिखाये न सके। गीता में भी है मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करोतो पाप भस्म हो जावेंगे।
अर्थ समझाते हैं ना। बाप की याद से तमोप्रधान से सतो0 बन जावेंगे। जब तक पतित-पावन बाप को याद
न करेंगे तो सतो0 न बनेंगे। इसमें मुंझने की दरकार नहीं नहीं हैं। बहुत सहज है। सिर्फ माया भूलाती है। तुम
चाहते हो हम बाबा को निरन्तर याद करें। सिमर2सुख पाओ ... तुम बच्चों को सुख था। एक दूसरा योगी हैवह
पायलट भी है। एक चेले भी है। हठयोग-राजयोगदोनो सिखलाते हैं। परन्तु दोनो तो सिखला न सके। रातदिन का
फर्क है। अर्थ भी समझते नहीं। यह कैसे हो सकता। हठयोग सन्यासियों ने सिखलाया, राजयोग भगवान ने सिखाया
फिर वह दोनो कैसे सिखला सकते। कहते हैं कृष्ण ने सिखाया वह भी तो एक था ना। वह तो हठयोगी नहीं
था। कृष्ण के साथ तो राधे थी। राजयोग बाप बिगर कोई सिखला न सके। मनुष्य हठयोग ही सिखलावेंगे। वह सिखलाते
क्यों है जाकर पूछना चाहिए। धीरे2 यह स्थापना होनी है। तुम पढ़ते हो एक युग में पद पाते होदूसरेयुग में।
यह है संगम युग। वह है सतयुग। ऐसी पढ़ाई सिर्फ तुम पढ़ते हो। और कोई कह न सके। यह तो बच्चे समझ
गये हैं उच्च ते उच्च ते बेहद का बाप है। बेहद का सुख है नई दुनिया का। उठते-बैठते, चलते अपन को आत्मा
समझ बाप को याद करना है। इस पढ़ाई बनने लिये ही यह शिक्षा देते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं कहते अपन
को आत्मा समझ बाप को याद करो। वहां तो है ही पवित्र। यह शिक्षा सिर्फ यहां ही बाप आकर देते हैं। बच्चों
को यह निश्चय हुआ हमारा बाबा हमको पढ़ाते भी हैं, बाप भी टीचर भी, गुरु भी है। संगम पर ही पहले बाप
बनते हैंफिर शिक्षा देते हैंफिर साथ में भी ले जाते हैं। इसीलिये एक को ही बापटीचर सद्गुरु कहा जाता। ओम।